तुलसी के काव्य में लोकमंगल

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी काव्य-रचना का मूल उद्देश 'लोकमंगल' का विधान करना स्वीकार किया है। ये कहते हैं:

कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

अर्थात् कीर्ति, कविता और ऐश्वर्य वही अच्छा होता है जो गंगा के समान सबका हित करने वाला हो। जो कविता लोकमंगल का विधान नहीं करती जिसे पढ़ने के बाद मन में सद्वृत्तियाँ जाग्रत नहीं होती, वह भला किस काम की, तुलसी ने यहाँ यही व्यंजना की है। तुलसी केवल यह कहते ही नहीं है, अपितु अपनी रचनाओं में लोकमंगल का विधान करते हुए स्वयं इसका पालन भी करते दिखाई पड़ते हैं। उनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' लोकमंगल का विधान करने वाला हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। अपने आदर्श चरित्रों के बल पर यह महान ग्रंथ जन-जन का कण्ठहार बना हुआ है और हिन्दुओं के पूजाघरों में स्थान पा रहा है।

कविता केवल वस्तुओं के रंग-रूप को छटा ही नहीं दिखाती अपितु कर्म और मनोवृत्ति के भी मार्मिक दृश्य सामने रखती है। उदारता, वीरता, त्याग दया इत्यादि कर्मों एवं मनोवृत्तियों का सौन्दर्य पाठक के हृदय में इन्हीं वृत्तियों को जगाता है। अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध 'राम का क्रोध'

पाठक को अच्छा लगता है। तुलसी के राम अवतारी ब्रह्म है जो संसार मे धर्म की स्थापना तथा अधर्म के मूलोच्छेद हेतु मानव शरीर धारण करते है:

जब-जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब-तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा॥

असुर संहारक राम धर्म संस्थापना के लिए अवतरित होकर लोकमंगल का विधान करते हुए दिखाए गए है।

संसार मे लोक व्यवहार सम्बन्धी उपदेश देने वालो का उतना महत्व नही है, जितना उन कर्मों को किसी चरित्र के रूप मे प्रस्तुत करके मन को उसकी ओर प्रवृत करने वाले कवियो का है। इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है—

"व्यक्ति सम्बन्धहीन सिद्धान्त मार्ग निश्चयात्मिका बुद्धि को चाहे व्यक्त हो, पर प्रवर्तक मन को अव्यक्त रहते हैं। वे मनोरंजनकारी तभी लगते है जब किसी व्यक्ति के जीवन क्रम के रूप मे देखे जाते है।"

जब इन रूपो पर मनुष्य मुग्ध होता है। तब सात्विक शील की ओर अपने आप आकर्षित हो जाता है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' मे यही किया है। उन्होने राम, भरत, सीता, हनुमान आदि चरित्रो मे ऐसे भावो का समावेश किया कि पाठक उनके इन चरित्रो को आदर्श मानते हुए उनका अनुकरण करते हुए सात्विक शील की

और अमुख है। गुण प्रत्यक्ष नहीं होता उसके आश्रय और परिणाम प्रत्यक्ष होते हैं। मन को आक-र्षित करनेवाले आश्रय और परिणाम है, गुण नहीं। तुलसी के 'राम' और 'भरत' सत्पथ के दीपक हैं, लोकमंगल का विधान करनेवाले आदर्श चरित्र हैं।

कविता केवल अर्थग्रहण मात्र नहीं कराती अपि-तु वह हमें मनुष्यता की उस उच्चभूमि पर ले जाती है जहाँ मनुष्य का जगत के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है। इस दशा में पहुँच हुआ मनुष्य का हृदय जगत के सुख-दुःख से प्रभावित होता है, वह स्वार्थ के संकुचित घेरे से ऊपर उठ जाता है। कविता का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, लोकमंगल का विधान करना भी है। वह मनुष्य के लिए अत्यन्त प्रयोजनी-य वस्तु है। कविता ही उसे मनुष्यता के उच्च सोपान पर पहुँचाती है। यदि कविता न हो तो उसे अपनी मनुष्यता खोने का डर उत्पन्न हो जाएगा। तुलसी, कबीर, सूर जैसे कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से मानव मात्र की मनुष्यता को जगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। इन महात्माओं की वाणी ने हमें सत्पथ एवं सन्मार्ग पर अग्रसर करने का जो कार्य किया, वह इनकी लोकमंगलकारी दृष्टि का ही सुपरिणाम है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार — "वह व्यवस्था या वृत्ति जिससे लोक में मंगल का विधान होता है, 'अभ्युदय' की सिद्धि होती है, धर्म है।"

राम के द्वारा रावण का वध या कृष्ण के द्वारा कंस का वध इसीलिए 'धर्म' के अन्तर्गत आता है क्योंकि इससे लोकमंगल का विधान होता है। काव्य-गुण कर्म सौन्दर्य के प्रभाव से अंत प्रकृति में प्रवृत्ति या निवृत्ति उत्पन्न करते हैं, उसका उपदेश नहीं देते। जहाँ पाठक का भाव तादात्म्य काव्य में वर्णित आश्रय के भाव से हो जाता है वहीं पूर्ण रसानुभूति हो पाती है और जहाँ वह आश्रय का शीलद्रष्टा मात्र रहता है, वहाँ केवल मनोरंजन होता है।

तुलसी ने अपने काव्य में 'राम' के जिस स्वरूप की व्यंजना की है कि उनके द्वारा किए गए शुभ कर्मों से पाठकों का पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, परिणामतः वे भी शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त होते हैं। लोक में मंगल का विधान करने वाले दो भाव हैं- 'करुणा' और 'प्रेम'। इसीलिए भावभूति ने 'करुण' रस को एकमात्र रस मानते हुए उद्घोषणा की है- "एको रसः करुण एव" । वाल्मीकि रामायण का बीजभाव 'करुणा' ही है। रावण द्वारा पीड़ित लोक की करुणा से द्रवित होकर ही राम राक्षस वध के लिए संन्नद्ध होते हैं।

तुलसी ने 'राम' के रूप में एक ऐसे आदर्श नायक की परिकल्पना की है जो भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की आदर्श एवं जीवन्त प्रतिमा

है। वे धर्म और नैतिकता के मानदण्ड है। उनमें त्याग, वैराग, लोकहित और मानवता का चरम उत्कर्ष देखा जा सकता है। वे सर्वगुण सम्पन्न सर्वशक्तिमान और शीलवान नायक के रूप में प्रतिष्ठित है। शील, शील और सौन्दर्य के भण्डार राम जन-जन के प्रिय पात्र है। वे मानवता के पोषक और उच्च आदर्शों के प्रतीक है। क्षात्र तेज से सम्पन्न राम लोकरक्षक और धर्म संस्थापक है। सीता के रूप में आदर्श अनुज और हनुमान के रूप में आदर्श भक्त, लक्ष्मण के रूप में आदर्श अनुज और हनुमान के रूप में आदर्श सेवक और नीति की जो परिकल्पना तुलसी ने प्रस्तुत की वह लोकमंगलकारी है। निश्चय ही तुलसी की राम कथा 'कलिमल हरन' करने में पूर्ण समर्थ है। उन्होंने अपने चरित्रांकन के माध्यम से महान नैतिक आदर्शों की स्थापना की है।

तुलसी ने अपने काव्य में समन्वय की विराट चेष्टा की है। उन्होंने अपने समय में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक क्षेत्रों में व्याप्त विषमताओं को दूर करते हुए प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय का अनूठा प्रयास किया। शैव और वैष्णव का समन्वय करते हुए वे राम से कहलवाते है:

सिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहु नहि भावा।

इसी प्रकार वे निर्गुण और सगुण का तथा ज्ञान और भक्ति का समन्वय करते हुए कहते है:

ग्यानहि अग्यानहि नाहिं कुछ भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा।

जो परमात्मा निर्गुण, निराकार है, वही भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर सगुण और साकार हो जाता है। इन दोनों में कोई भेद नहीं है।

अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥

तुलसी का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज के हर क्षेत्र में विषमता, द्वेष और वैमनस्य व्याप्त था। धर्म, समाज, दर्शन सभी क्षेत्रों में विकराव था। ऐसे विषम वातावरण में तुलसी जैसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो समन्वय के माध्यम से लोकमंगल की विधान कर सके। विरोध दूर करके पारस्परिक भेद-भाव को मिटाकर समरसता उत्पन्न करना ही समन्वय है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने तुलसी को महान लोक-नायक मानते हुए लिखा है — "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।"

लोकमंगल की भावना तुलसी के काव्य में प्रमुखता से उपलब्ध होती है। उनके राम "मंगल भवन अमंगल हारी" है तथा उनकी रामकथा भी मंगल का विधान करने वाली है।

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की॥

निश्चय ही तुलसी का काव्य जनकल्याण-कारी है, अमंगल का विनाश करनेवाला तथा मंगल का विधान करनेवाला है। इससे अधिक रामचरितमानस की महत्ता और क्या हो सकती है कि अमंगल की शान्ति तथा मंगल का विधान करने हेतु इस ग्रन्थ के अखण्ड पाठ आज भी हिन्दू घरों में कराया जाते हैं और आस्तिक बुद्धि वाले हिन्दू प्रतिदिन पूजा करते समय इसके एक अंश का पारायण करके आत्म-शान्ति प्राप्त करते हैं।